भारत सरकार

पर्यटन मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 151

मंगलवार, 11 दिसम्बर, 2018/20 अग्रहायण, 1940 (शक)

को दिया जाने वाला उत्तर

महाराष्ट्र और पश्चिमी बंगाल में समुद्री 'बीचों' का विकास

151. श्रीमती शांता क्षत्री:

क्या **पर्यटन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या महाराष्ट्र और पश्चिमी बंगाल में विशाल तटरेखा हैं, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ख) क्या मंत्रालय ने पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए मिदनापुर तट और सुन्दरवन तट तथा महाराष्ट्र के पश्चिमी तटों पर 'बीचों' का विकास करना शुरू कर दिया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) (श्री के.जे. अल्फोंस)

(क): महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल के समुद्र तटों की लम्बाई, जैसा कि नेशनल हाइड्रोग्राफिक कार्यालय (एनएचओ) द्वारा वर्ष 2011 में आकलन किया गया है, क्रमश: 896.98 किमी और 662.90 किमी. है ।

(ख): वर्ष 2014-15 में पर्यटन मंत्रालय ने देश में थीम आधारित पर्यटक परिपथों के विकास के उद्देश्य से स्वदेश दर्शन योजना का शुभारम्भ किया है । समुद्र तटीय परिपथ इस योजना के अंतर्गत विकास के लिए चिह्नित पन्द्रह थीमैटिक परिपथों में से एक है ।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल राज्यों के लिए स्वदेश दर्शन के समुद्र तटीय परिपथ थीम के अंतर्गत निम्नानुसार परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं:

(करोड़ रु. में)

क्र. सं.	**राज्य/संघ राज्य क्षेत्र**	**परिपथ का नाम और वर्ष**	**परियोजना का नाम**	**स्वीकृत राशि**
1.	महाराष्ट्र	तटवर्ती परिपथ (2015-16)	महाराष्ट्र में सिंधुदुर्ग तटवर्ती परिपथ का विकास ।	82.17
2.	पश्चिम बंगाल	तटवर्ती परिपथ (2015-16)	पश्चिम बंगाल में समुद्रतट परिपथ: उदयपुर - दीघा - शंकरपुर - ताजपुर -मंदारमणि - फ्रेजरगंज- बक्खलई - हेनरी द्वीप का विकास ।	85.39

****